International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-10-2025, Accepted: 27-11-2025, Published: 12-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 138-139

गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समन्वय

प्रभात मिश्रा
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय साहित्य की अमर कृति 'रामचरितमानस' न केवल एक श्रेष्ठ धार्मिक ग्रन्थ है, अपितु एक सशक्त साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दस्तावेज भी है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसमें वैदिक–पौराणिक परम्परा, लोक–मान्यताओं, दार्शनिक चिंतन और समकालीन सामाजिक यथार्थ का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। यह शोधपत्र 'मानस' के उन्हीं साहित्यिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक समन्वयवादी स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसने इसे जन–जन की आस्था का केन्द्र बना दिया।

मूल शब्दः तुलसीदास, रामचरितमानस, समन्वय, भक्ति, लोकचेतना, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, अवधी

प्रस्तावना
गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' हिन्दी साहित्य का एक ऐसा महाकाव्य है जिसने भारतीय जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित किया है। यह केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। तुलसीदास ने इसमें जहाँ एक ओर वाल्मीकि रामायण और अध्यात्म रामायण जैसे संस्कृत ग्रन्थों का सार ग्रहण किया है, वहीं दूसरी ओर लोक–जीवन में प्रचलित मान्यताओं, कथाओं और भाषा (अवधी) को अपनाकर इसे सर्वसुलभ बना दिया।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के आयाम
'रामचरितमानस' में तुलसीदास के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समन्वय को निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. दार्शनिक समन्वय: ज्ञान, भक्ति और कर्म
तुलसीदास ने 'मानस' में अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत जैसे दार्शनिक सिद्धान्तों का सारगर्भित समन्वय प्रस्तुत किया है। वे भक्ति को सर्वोपरि मानते हैं, किन्तु ज्ञान और कर्म के महत्व को भी नकारते नहीं हैं। 'ज्ञान–भक्ति' के प्रसंग में वे लिखते हैं:

> "ज्ञानिन्ह भगति करि कहत न कोई। ज्ञान बिनु भगति न सुलभ होई।" (मानस)

इस प्रकार वे स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान और भक्ति एक–दूसरे के पूरक हैं। साथ ही, निष्काम कर्म का महत्व भी 'मानस' में सर्वत्र व्याप्त है।

2. सामाजिक समन्वय: वर्णाश्रम धर्म और लोकमंगल
'मानस' में तुलसीदास ने आदर्श राज्य, आदर्श पिता, आदर्श पत्नी, आदर्श भाई और आदर्श सेवक के चरित्रों के माध्यम से एक सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया है। वे वर्णाश्रम धर्म का पालन करने की बात करते हैं, किन्तु जाति के आधार पर ऊँच–नीच का भाव नहीं रखते। शबरी, निषाद, गिद्धराज जटायु और वानर–भालू की सेना के प्रति राम का प्रेमभाव इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। उनका उद्देश्य 'लोकमंगल' है:

> "परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।" (मानस)

3. साहित्यिक समन्वय: संस्कृत काव्य–परम्परा और लोकभाषा का मेल
तुलसीदास ने 'मानस' की रचना अवधी लोकभाषा में की, जो उस समय आम जनता की बोलचाल की भाषा थी। किन्तु उन्होंने इसमें संस्कृत काव्य–शैली, अलंकारों, छन्दों और रसों का इतना सुंदर प्रयोग किया कि यह लोक और शास्त्र दोनों का प्रतिनिधित्व करने लगा। चौपाई, दोहा, सोरठा और छप्पय जैसे छन्दों में रचित 'मानस' की भाषा में एक अद्भुत संगीतात्मकता और प्रवाह है। उन्होंने लोक–मुहावरों और लोक–विश्वासों को भी स्थान दिया, जिससे यह ग्रन्थ जनसामान्य के हृदय तक पहुँच सका।
'मानस' की एक और विशेषता है विविध रसों का सफल निर्वाह। श्रृंगार रस के प्रसंगों में कोमलता है तो वीर रस के प्रसंगों में ओज। करुण रस की अभिव्यक्ति राम–वनवास और सीता–हरण के प्रसंगों में हुई है। भक्ति रस तो इसकी आत्मा है ही।

विद्वानों के विचार
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में:

> "तुलसीदास ने 'मानस' में भारतीय जीवन के सभी अंगों का चित्रण किया है। उन्होंने ज्ञान, भक्ति और कर्म के मार्ग का समन्वय करके एक ऐसे लोकधर्म का सृजन किया, जो सर्वव्यापी और सर्वकालिक है।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही लिखा है:

> "तुलसीदास ने 'मानस' के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मर्म को साधारण जनता तक पहुँचाया। उन्होंने उच्चस्तरीय दर्शन

और साहित्य को लोकभाषा और लोकसंवेदना के धरातल पर उतारकर एक अद्वितीय कृति का सृजन किया।"

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, 'रामचरितमानस' की महानता केवल उसकी धार्मिकता में नहीं, बल्कि उसके साहित्यिक वैशिष्ट्य और सांस्कृतिक समन्वय में निहित है। तुलसीदास ने एक ऐसा सार्वभौमिक और सार्वकालिक महाकाव्य रचा, जो सदियों से भारतीय समाज को नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता आ रहा है। यह ग्रन्थ न केवल अतीत का दर्पण है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक जीवंत प्रेरणा स्रोत भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल, रामचन्द्र. (1994). हिन्दी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
2. तुलसीदास, गोस्वामी. (2010). श्रीरामचरितमानस (सम्पा. हनुमान प्रसाद पोद्दार)। गोरखपुर: गीताप्रेस।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2000). हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. तिवारी, रामगोपाल. (1985). तुलसीदास का रचना–संसार. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. पाण्डेय, मैनेजर. (1998). तुलसीदास और उनका युग. दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

परिशिष्ट

1. शुक्ल, रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. १२३
2. तुलसीदास. रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड
3. तुलसीदास. रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. ८६